आंखों के निदान में ज़री उपयोग

रंजीत कुमार सौरभ

हैदराबाद स्थित एल.वी. प्रसाद नेत्र अनुसंधान संस्थान के नेत्र विशेषज्ञ एल. एस. मोहन राम ने आयातित महंगे डीटीएल इलेक्ट्रोड की जगह ज़री के काम में उपयोग किए जाने वाले सस्ते धागे का इस्तेमाल कर संतोषजनक परिणाम हासिल किए हैं।

नेत्र रोगी का रेटिना अच्छी तरह कार्य कर रहा है या नहीं, इसकी जांच करने के लिए रेटिना पर प्रकाश की किरणें डालकर रेटिना से उत्पन्न विद्युत संकेतों का मापन करना पड़ता है। इसमें कॉर्निया पर इलेक्ट्रोड लगाए जाते हैं जो रेटिना से उत्पन्न संकेतों को ग्रहण करते हैं। इस प्रक्रिया को इलेक्ट्रोरेटिनोग्राम कहते हैं। इसके लिए एक विशेष तरह के पदार्थ डीटीएल इलेक्ट्रोड का प्रयोग किया जाता है। यह पदार्थ भारत में आयात किया जाता है, जो काफी महंगा पड़ता है। एक मीटर डीटीएल की कीमत करीब 2500 रुपए चुकाना पड़ती है। इस वजह से भारतीय डॉक्टरों ने एक ऐसे पदार्थ की खोज शुरु की, जो इसका सस्ता व घरेलू विकल्प हो।

इस प्रयास में जुटे भारतीय नेत्र विशेषज्ञ एल. एस. मोहन राम ने काफी सस्ता और घरेलू स्तर पर ज़री से एक नया उत्पाद तैयार किया है। ज़री का उपयोग भारत में रेशम के कपड़ों पर कशीदाकारी और बुनाई के लिए होता है। ज़री मुख्यतः नायलॉन के धागे से बनती है। इसके ऊपर तांबे, चांदी या सोने का आवरण होता है।

डॉ. मोहन राम ने इस ज़री का उपयोग दर्जन भर नेत्र रोगियों पर किया है। इन रोगियों का रेटिना अच्छी तरह काम नहीं कर रहा था। उन्होंने इनकी जांच करने के लिए रेटिना पर प्रकाश की किरणें डाली, फिर विद्युत सिग्नल भेजने की प्रक्रिया में ज़री का प्रयोग किया गया। इसका प्रभाव भी डीटीएल की तरह ही रहा। इस विधि और डीटीएल विधि की तुलना करने पर कोई अंतर नही देखा गया। इस प्रयोग की सफलता से डॉ. मोहन राम एक नई आशा जगी है।

अब तक अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से नवाज़े गए डॉ. मोहन राम ने कहा कि डीटीएल के विकल्प की खोज से न सिर्फ आयात प्रतिस्थापन के ज़रिए विदेशी मुद्रा की बचत होगी, बल्कि इस विकल्प के काफी सस्ता होने की वजह से आंखों का उपचार भी सस्ता हो जाएगा। एक मीटर ज़री की कीमत करीब पचास रुपए आएगी। इस खोज से माना जा रहा है कि नेत्र चिकित्सा को एक नई दिशा मिलेगी। विशेषकर तीसरी दुनिया के गरीब रोगियों के लिए यह खोज एक वरदान साबित होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***